तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

प्रस्तावना के मुख्य बिन्दु

- शास्त्र के कर्ता तथा शास्त्र की टीकाएँ
- शास्त्र के नाम की सार्थकता
- शास्त्र के विषय
- शास्त्र में कथन पद्धति
- शास्त्र की टीका के आधारभूत शास्त्र

शास्त्र के कर्ता - तत्त्वार्थसूत्र - रचयिता: श्री उमास्वामी आचार्य

- यह संस्कृत भाषा में सर्व प्रथम जैन ग्रन्थ है।
- यह ग्रन्थ सूत्रात्मक शैली में लिखा गया है।
- जैन साहित्य का आदि सूत्र ग्रन्थ है।
- श्री उमास्वामी आचार्य श्री कुन्दकुन्द आचार्य के पट्ट शिष्य थे।

तत्त्वार्थसूत्र - टीकाएँ [आचार्यकृत]

- गंधहस्ति महाभाष्य - आचार्य समन्तभद्र
- सर्वार्थसिद्धि - आचार्य पूज्यपाद
- तत्त्वार्थ राजवार्तिक - आचार्य अकलंकदेव
- तत्त्वार्थ श्लोकवार्तिक - आचार्य विद्यानन्दि
- तत्त्वार्थसार - आचार्य अमृतचंद्र
- आदि ...

तत्त्वार्थसूत्र - टीकाएँ [विद्वानकृत]

- अर्थप्रकाशिका - पं॰ सदासुखदासजी
- मोक्षशास्त्र - मु॰ रामजीभाई दोशी
- आदि ॰॰॰

इस पाठशाला के लिए आधार *मु॰ रामजीभाई दोशी* द्वारा रची गई *मोक्षशास्त्र* टीका है।

शास्त्र के नाम की सार्थकता

- **‘ मोक्षशास्त्र ’** - पथभ्रान्त संसारी जीवों को आचार्यदेवने मोक्षमार्ग दर्शाया है।
- **‘ तत्त्वार्थसूत्र ’** - प्रयोजनभूत तत्त्वों के सटीक अर्थ दर्शाये गये है।

शास्त्र के विषय

अध्याय	विषय	सार
१ - ४	जीव तत्त्व	संसारी जीव और निश्चय सम्यग्दर्शन - ज्ञान का स्वरूप
५	अजीव तत्त्व	पुदगलादि अजीवद्रव्यों तथा द्रव्य-गुण-पर्याय का वर्णन
६ - ७	आस्त्रव तत्त्व	आस्त्रव तत्त्व का वर्णन , ८ कर्मों के आस्त्रव का कारण
८	बंध तत्त्व	बंध के कारण , भेदों और स्थिति का वर्णन
९	संवर व निर्जरा तत्त्व	निश्चय सम्यक्चारित्र और निर्ग्रन्थ मुनियों का स्वरूप
१०	मोक्ष तत्त्व	मोक्ष तत्त्व का वर्णन

शास्त्र के विषय - तत्त्वज्ञान का भण्डार

- निश्चयसम्यग्दर्शन–सम्यग्ज्ञान–सम्यक्चारित्ररूप मोक्षमार्ग
- प्रमाण–नय–निक्षेप
- जीव–अजीवादि सात तत्त्व
- ऊर्ध्व–मध्य–अधोः तीन लोक
- चार गतियाँ
- छह द्रव्य और
- द्रव्य–गुण–पर्याय

शास्त्र में कथन पद्धति

- इस शास्त्र में पर्यायार्थिक नय की मुख्यता से वस्तुस्वरूप का कथन है।

तत्त्वार्थसूत्र

मंगलाचरण

ग्रन्थ सम्बन्धी जानने योग्य ६ बातें

प्रश्न	उत्तर
ग्रन्थ का नाम	तत्त्वार्थसूत्र
ग्रन्थ के रचयिता	श्री उमास्वामी आचार्य
ग्रन्थ का प्रमाण	१० अध्याय , ३५७ सूत्र
मंगलाचरण	अरहंत देव को नमस्कार किया है
निमित्त	भव्य जीवों के निमित्त
हेतु	मोक्ष प्राप्ति हेतु

मंगलाचरण की विशेषता

शास्त्र	श्लोक प्रमाण	रचनाकार	विशेषता
मोक्षशास्त्र का मंगलाचरण	१	श्री उमास्वामी आचार्य	अरिहंत भगवान को गुणप्रधान नमस्कार
देवागम स्तोत्र अपरनाम आप्तमीमांसा	११५	आचार्य समन्तभद्र	गंधहस्ति महाभाष्य का मंगलाचरण
अष्टशती	८००	आचार्य अकलंकदेव	स्वतंत्र शास्त्र
अष्टसहस्त्री	८०००	आचार्य विद्यानन्दि	स्वतंत्र शास्त्र

मंगलाचरण करने का कारण

- स्वयं के अविनाशी कल्याण के लिए
- ग्रंन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए
- उपकार का स्मरण करने के लिए

मूलसूत्र

हितोपदेशी वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ प्रयोजन - भावना

अर्थ

हितोपदेशी वीतरागी

मोक्षमार्ग के प्रवर्तक, कर्मरूपी पर्वतों के भेदक, अर्थात् नष्ट करनेवाले तथा विश्व के (समस्त) तत्त्वों के जाननेवाले, (आप्त) को उनके गुणों की प्राप्ति के हेतु मैं प्रणाम करता हूँ - वन्दना करता हूँ।

सर्वज्ञ प्रयोजन - भावना

विशेष

मङ्गलाचरण में नमस्कार करते हुए देवागमन, समवसरण, चामर और दिव्य-शरीरादि पुण्य-विभूतियों का उल्लेख नहीं किया गया है, जो तीर्थङ्कर भगवान के पास होती हैं क्योंकि पुण्य, आत्मा का गुण (शुद्धता) नहीं है।

भेत्तारं कर्मभूभृताम् - वीतरागता का स्वरूप

कर्मरूपी पर्वतों के भेदक, अर्थात् नष्ट करनेवाले

- कर्म
  - भावकर्म — मोह-राग-द्वेष
  - द्रव्यकर्म — मोहनीय कर्म

भेत्तारं कर्मभूभृताम् - वीतरागता का स्वरूप

कर्मरूपी पर्वतों के भेदक, अर्थात् नष्ट करनेवाले

जब जीव, सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र से भावकर्मरूपी पर्वतों को दूर करता है, तब द्रव्यकर्म स्वयं ही अपने आप हट जाते हैं—नष्ट हो जाते हैं; जीव की शुद्धता का और कर्मक्षय का ऐसा निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है—यहाँ यही बताया गया है। जीव, जड़कर्म को परमार्थतः नष्ट कर सकता है—यह कहने का आशय नहीं है।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां - सर्वज्ञता का स्वरूप

तथा विश्व के (समस्त) तत्त्वों के जाननेवाले,

- परिभाषा
- वीतरागी → सर्वज्ञता [४ घातिकर्म का क्षय]
- अन्य नाम: केवलज्ञान , अनंतज्ञान , पूर्णज्ञान , क्षायिकज्ञान
- अरिहंत [गुणस्थान - १३ , १४] एवं सिद्ध भगवान

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां - सर्वज्ञता का स्वरूप

- सर्वज्ञता की सिद्धि
  - सामान्य सिद्धि — लोक में सर्वज्ञता की सत्ता है।
  - विशेष सिद्धि — अरिहंत भगवान सर्वज्ञ है।

क्रमबद्धपर्याय की सिद्धि में सर्वज्ञता प्रबल हेतु है।

मोक्षमार्गस्य नेतारं - हितोपदेशीपने का स्वरूप

मोक्षमार्ग के प्रवर्तक,

- धर्म के मूल
- मूल ग्रन्थ कर्ता
- साक्षात उपकारक - स्वयं कोन है ? यह बतानेवाले
- स्वयं अनंत सुख का वेदन करनेवाले और हमें सुखी होने का मार्ग बतानेवाले

वन्दे तद्गुणलब्धये - प्रयोजन - भावना का स्वरूप

(आप्त) को उनके गुणों की प्राप्ति के हेतु मैं प्रणाम करता हूँ – वन्दना करता हूँ।

- द्रव्य नमस्कार
- भाव नमस्कार

वन्दे तद्गुणलब्धये - प्रयोजन - भावना का स्वरूप

सिद्धदशा

अरिहंतदशा

मुनिदशा

सम्यकदर्शन-ज्ञान-चारित्र - ४ एवं ५ गुणस्थान

मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र - अज्ञानदशा

वन्दे तद्गुणलब्धये - प्रयोजन - भावना का स्वरूप

इस प्रकार भगवान के गुणों का स्वरूप बतलाकर, गुणों को पहचान करके उनकी स्तुति की है। वैसे निश्चय से, अपनी आत्मा की ही स्तुति की है।

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १

विषय-वस्तु

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
मोक्षमार्ग का स्वरूप	१	१
सम्यग्दर्शन	२-४	३
पदार्थों के जानने के उपाय	५-८	४
सम्यग्ज्ञान-प्रमाण	९-१२	४
मतिज्ञान	१३-१९	७
श्रुतज्ञान	२०	१

विषय-वस्तु

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अवधिज्ञान और मन:पर्यय ज्ञान	२१-२५	५
पाँच ज्ञानों का विषय	२६-२९	४
एक साथ कितने ज्ञान सम्भव	३०	१
मिथ्याज्ञान	३१-३२	२
नय	३३	१

विषय-वस्तु

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या	१	१
निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण	२	१
निश्चय सम्यग्दर्शन के भेद	३	१
तत्त्वों के नाम	४	१
निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीत	५	१

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र १

निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥ १ ॥

अर्थ : [सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि] सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, और सम्यक्चारित्र तीनों मिलाकर [मोक्षमार्गः] मोक्ष का मार्ग है, अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति का उपाय है।

सम्यग्दर्शन + सम्यग्ज्ञान + सम्यक्चारित्र = मोक्षमार्ग
तीनों की एकता ही मोक्षमार्ग है।

जीव के विशेष गुणों का स्वरूप

गुण	स्वरूप	सम्यक् शब्द पहले रखने से
दर्शन [१] = श्रद्धा	प्रतीति/मान्यता	आत्मा की यथार्थ प्रतीति
ज्ञान	जानना	आत्मा को यथार्थ जानना
चारित्र	लीनता	आत्मा में यथार्थ लीनता

[१] यहाँ ‘ दर्शन ’ का अर्थ सामान्य प्रतिभास नही है।

सम्यग्दर्शन का स्वरूप

- सम्यग्दर्शन का अर्थ “ऐसा ही है; अन्यथा नहीं” -- ऐसा प्रतीतिभाव।
- अपने आत्मा की विपरीततारहित --- यथार्थ प्रतीति सम्यग्दर्शन है।

सम्यग्ज्ञान का स्वरूप

- संशय , विपर्यय , और अनध्यवसायरहित अपने आत्मा का तथा पर का यथार्थज्ञान , सम्यग्ज्ञान है।

सम्यग्ज्ञान का स्वरूप: संशय का स्वरूप

- **परिभाषा**–परस्पर विरुद्धतापूर्वक दो प्रकाररूप ज्ञान को संशय कहते हैं
- **द्रष्टांत १.** जैसे, आत्मा अपने कार्य को कर सकता होगा या जड़ के कार्य को ?
- **द्रष्टांत २.** शुभरागरूप व्यवहार से धर्म होगा या वीतरागरूप निश्चय से ?

सम्यग्ज्ञान का स्वरूप: विपर्यय का स्वरूप

- **परिभाषा**–वस्तुस्वरूप से विरुद्धतापूर्वक 'ऐसा ही है'—इस प्रकार का एकरूपज्ञान, विपर्यय है।
- **द्रष्टांत** – जैसे, शरीर को आत्मा जानना।

सम्यग्ज्ञान का स्वरूप: अनध्यवसाय का स्वरूप

- **परिभाषा** - 'कुछ है'—ऐसा निरधाररहित विचार, अनध्यवसाय है।

- **द्रष्टांत** - जैसे, मैं कोई कुछ हूँ—ऐसा जानना।

सम्यक्चारित्र का स्वरूप

- सम्यग्दर्शन-ज्ञानपूर्वक आत्मा में स्थिरता का होना सम्यक्चारित्र है।

मोक्षमार्ग का स्वरूप

- यह शब्द एकवचन है।
- मोक्ष के तीन मार्ग नहीं होते, किन्तु इन तीनों [सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र] का एकत्व मोक्षमार्ग है।
- मोक्षमार्ग --- अपने आत्मा की शुद्धि का मार्ग, पंथ, उपाय
- दूसरे नाम: अमृतमार्ग, स्वरूपमार्ग, कल्याणमार्ग

निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या

इस सूत्र में 'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि' कहा है, वह निश्चयरत्नत्रय है; व्यवहाररत्नत्रय नहीं है।

निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या

इस सूत्र में अस्ति से कथन है, जो यह सूचित करता है कि इससे विरुद्धभाव, जैसे कि राग, पुण्य इत्यादि से धर्म होता है या वे धर्म में सहायक होते हैं, इस प्रकार की मान्यता, ज्ञान और आचरण, मोक्षमार्ग नहीं है।

निश्चय - व्यवहार मोक्षमार्ग का स्वरूप

स्वरूप	सम्यग्दर्शन	सम्यग्ज्ञान	सम्यक्चारित्र
निश्चय [मोक्षमार्ग]	परपदार्थों से भिन्न आत्मा की प्रतीति	परपदार्थों से भिन्न आत्मा का जानना	परपदार्थों से भिन्न आत्मा में लीनता
व्यवहार [बंधमार्ग]	सात तत्त्वों का भेदरूप श्रद्धान	सात तत्त्वों का सही ज्ञान	अशुभ से निवृत्ति शुभ में प्रवृत्ति

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र १

विषय-वस्तु

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या	१	१
निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण	२	१
निश्चय सम्यग्दर्शन के भेद	३	१
तत्त्वों के नाम	४	१
निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीत	५	१

जिनवाणी स्तुति